भावभीनी श्रद्धांजलि

संपादक

डॉ. दिलीप मेहरा

आचार्य, स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग,

सरदार पटेल विश्वविद्यालय, वल्लभ विद्यानगर, गुजरात-388120

सचलभाष : 94263 63370

आवास : यश भवन, प्लोट नंबर : 1423/1

शालिनी अपार्टमेंट के पीछे, नाना बाजार, वल्लभ विद्यानगर

जि. आणंद-388120

Web. : www.dilipmehra.com

BOOK-POST PRINTED MATTER

To,

ISSN : 2319-6513

साहित्य वीथिका

Sahitya Veethika

वर्ष : 11
अंक - 18

साहित्य वीथिका

ISSN : 2319-6513
जून 2021

सतीन देसाई 'परवेज़' विशेषांक
(त्रैमासिक अंतर्राष्ट्रीय शोध-पत्रिका)

संपादक
डॉ. दिलीप मेहरा

❍

संरक्षक
डॉ. मालती दुबे, डॉ. सतीन देसाई 'परवेज़'

❍

सम्पादक मण्डल
डॉ. शिवप्रसाद शुक्ल (उपसंपादक)
डॉ. दीपेन्द्र जडेजा, डॉ. प्रेमचन्द कोराली
डॉ. खन्नाप्रसाद अमीन, डॉ. हसमुख परमार

❍

परामर्शक
तेजेन्द्र शर्मा (लंदन), सुरेश चन्द्र शुक्ल 'शरद आलोक' (नार्वे)
डॉ. बापूराव देसाई (महाराष्ट्र), डॉ. पारुकान्त देसाई (गुजरात), डॉ. मदनमोहन शर्मा (गुजरात)

❍

प्रकाशक
उत्कर्ष पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स
A-685 आवास विकास, हंसपुरम्, कानपुर -208 021 (उ.प्र.)
Email : utkarshpublishersknp@gmail.com
Mob. : 8707662869, 9554837752

❍

कला सज्जा
रुद्र ग्राफिक्स, कानपुर

❍

व्यवस्थापकीय पता
शोभा मेहरा
यश भवन, प्लॉट नम्बर - 1423/1, शालिनी अपार्टमेंट के पीछे,
नाना बाजार, वल्लभ विद्यानगर, जि. आणंद - 388120
ई-मेल : sahityaveethika@gmail.com, सचलभाष - 9426363370

पत्रिका में प्रकाशित कविता, लेखादि में अभिव्यक्त विचारों से प्रकाशक या सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है। समस्त विवादों के लिए न्यायालय का क्षेत्र आणंद, गुजरात होगा।

An International Peer Reviewed Referred Quarterly Research Journal of Literature

सदस्यता शुल्क
वार्षिक 200 रुपये
पंचवर्षीय 1500 रुपये
आजीवन 3000 रुपये
संस्था के लिए : वार्षिक 300 रुपये
आजीवन 3500 रुपये

अनुक्रम

सतीन देसाई 'परवेज़' की ग़ज़लें 05

नज़्में 37

सतीन देसाई 'परवेज़' की कहानियाँ

1. फरिश्तों का बसेरा 39
2. निशां में छिपा जहाँ 42
3. राख का ढेर 44
4. दक्षिणा 47
5. महाबली 49

आलेख

1. रूहानी दीप्ति के नाम मेरी आरती
   सतीन देसाई ''परवेज'' 51
2. गज़ल-समाधि में लीन कबीराना 'परवेज़'
   डॉ. ऋषिपाल धीमान 'ऋषि' 53
3. कैवल्य से उपजी आभा से दीप्त है डॉ. सतीन देसाई ''परवेज़'' दीप्ति ''गुरु'' का लेखन
   डॉ. जय वैरागी 56
4. गुजरात के कबीर : डॉ. सतीन देसाई
   विजय तिवारी 59
5. डॉ. सतीन देसाई 'परवेज़' दीप्ति ''गुरु'' की गुजराती सर्जनी की मीनाकारी...
   प्रताप सिंह डाभी ''हाकल'' 63
6. पुष्टि भक्ति गज़ल ग्रंथ ''प्रेमायन'' की पुलकित सौरभ
   मोहनभाई बारोट 67
7. 'आत्मस्वीकृति का आयना'- पश्चाताप के हस्ताक्षर और कारावास
   डॉ. भरत जादव 'निरपेक्ष' 69
8. एक संजीदा व्यक्तित्व डॉ. सतीन देसाई दीप्ति ''गुरु'' विस्तृत व्यक्तिगत परिचय
   सुशील ओझा 72
9. नसीब की मुअत्तर रेखाएं
   रेखा किंगर ''रोशनी'' 75
10. सतीन देसाई 'परवेज़ दीप्ति' गुरु की गज़ल 'हो गया' का आस्वाद
    त्रिलोक मेहता 77
11. गुजराती-हिंदी-उर्दू साहित्य का त्रिवेणी संगम डॉ. सतीन देसाई 'परवेज' दीप्ति 'गुरु'
    घनश्याम भाई पटेल 79
12. डॉ. सतीन देसाई एक शख़्सियत...
    शरदकांतजी मिश्र 'लंकेश' 81
13. जान परत है काक पिक रितु बसंत के माहि
    जयेन्द्र त्रिपाठी 83
14. डॉ. सतीन देसाई 'परवेज़' एक अलगारी गज़लनुमा व्यक्तित्व
    सुधीर पटेल 85
15. एहसास-ए-तरजुमा
    डॉ. दिलीप मेहरा 87
16. फनकाराना रूहानियत
    राजु गोहील ''कंवल'' 89
17. A Spiritual Traveller!
    Biren Desai 90

(कहानी/विविध आलेख)

1. साजिश
   डॉ. दिलीप मेहरा 91
2. आंचलिकता के आईने में रेणु की कहानियाँ
   डॉ. मनीषा ठक्कर 95
3. अमीर खुसरो के साहित्यिक अवदान का महत्व
   डॉ. हसमुख परमार 99
4. स्त्री-विमर्श और मेहरून्निसा परवेज़ की कहानियाँ
   जितेंद्र वाघेला 103
5. नारी विमर्श की कहानी 'जवान मिट्टी'
   प्रा. डॉ. कल्पना पाटील 106
6. पीएच.डी. बनाम शोध एवं पद का द्वंद्व
   नीलम वाधवानी 109
7. आदिवासी : भारत भूमि के मूल निवासी
   डॉ. ईश्वर आहिर 113
8. मानसिक स्वास्थ्य और विद्यालयों एवं समाज का उत्तरदायित्व
   डॉ. मानसिंग तावियाड 115
9. बांगलादेशियों की पीड़ाओं की महागाथा 'मैं बोरिशाइल्ला'
   रोहित चौहान 118
10. मैत्रेयी पुष्पा जी के उपन्यास साहित्य में नारी संघर्ष
    हेम लता 121
11. मुंशी प्रेमचंद के उपन्यास 'गोदान' का फिल्मांकन
    मनीषकुमार ए. प्रजापति 125

- बेहद इन्सानी शख्सियत : डॉ. सतीन देसाई 'परवेज़'
  अशीर भाई चोक्सी 52
- श्री सतीन देसाई 'परवेज' पूरा इंद्र धनुष
  डॉ. नीतिन वोरा 55
- हर जुबान के शहंशाह डॉ. सतीन देसाई 'परवेज'
  डॉ. मुकुल शाह 58
- उपोद्घात
  प्रकाश चन्द्र चौबे 68
- लाफानी जज़्बात के मालिक ...डॉ. सतीन देसाई ''परवेज़'' दीप्ति ''गुरु''
  कौशिक शाह, राजुल कौशिक 88
- गीत
  प्रमिलेश शुक्ला 108
- ग़ज़ल 41
  डॉ. जयदीप शाह
- ''परवेज़'' की मेरी अनुभूतियाँ 62
  डॉ. अशोक पटेल
- मातृभक्त 'परवेज़' को सलाम 84
  डॉ. गुरुदत्त ठक्कर

****

10. मैत्रेयी पुष्पा जी के उपन्यास साहित्य में नारी संघर्ष

हेम लता

मैत्रेयी पुष्पा का जन्म 30 नवंबर 1944 को अलीगढ़ जिले के सिकुर्रा गांव में हुआ। इनके जीवन का आरंभिक भाग बुंदेलखंड में बीता। इन्होंने नारी को शोषण से मुक्त कराने और उसकी स्वतंत्र अस्मिता को स्थापित करने का प्रयास किया है। इन्होंने अपनी रचनाओं में ऐसी नारी की छवि को अंकित किया है जो स्वयं संघर्ष करती है।

मैत्रेयी पुष्पा ने अपने उपन्यास साहित्य में नारी जीवन में आने वाले विभिन्न संघर्षों को प्रकट किया है जो मुख्यतः समाज में महिलाओं पर लिंग भेदभाव पर हो रहे अत्याचार को प्रकाशित करते हैं। मैत्रेयी के एक–एक स्त्री पात्र संघर्ष करते नज़र आते हैं। जैसे चाक की सारंग नैनी, इदन्नमम में मंदाकिनी ,अल्मा कबूतरी की अल्मा, झूलानट की शीलो, विजन में डॉक्टर आभा व डॉ नेहा, बेतवा बहती रही की उर्वशी, अगनपाखी की भुवनमोहिनी, गुनाह बेगुनाह कि सुरिंदर कौर ,इला चौधरी, कही इसुरी फाग की रजऊ, सरस्वती और फ़रिश्ते निकले की बेला बहू जैसे स्त्री पात्र अनेक संघर्षों से जूझती नज़र आती हैं।

उपर्युक्त सभी उपन्यासों की कथावस्तु भले ही अलग–अलग हो परंतु इनके स्त्री पात्र पितृसत्ता नियमों के खिलाफ लड़ते नजर आते हैं इसलिए मैत्रेयी पुष्पा जी स्त्री जीवन को लेकर लिखी जाने वाली उच्च कोटि के कथाकार मानी जाती हैं। जिनके साहित्य का केंद्र बिंदु नारी विचार विमर्श ही रहा है। मैत्रेयी पुष्पा के कथा साहित्य में नारी संघर्षशील दिखाई पड़ती है। इन्होंने ऐसे नारी पात्रों को स्थान दिया है जो आधुनिक परिवेश में परिलक्षित होती है। इन्होंने अब तक कुल 11 उपन्यासों की रचना की है। जिसमें 'चाक' उपन्यास सर्वोत्तम है चाक की नायिका सारंग नैनी है जो आजीवन संघर्ष करती है। सारंग जन्मजात विद्रोहिणी प्रवृत्ति की नारी नहीं थी बल्कि पुरुष समाज के अत्याचार ने उसे विद्रोहिणी बना दिया था। इस उपन्यास में अनेक ऐसे पात्र हैं जिनका जीवन अनेक समस्याओं से भरा है जैसे रेशम, गुलकंदी, हरिप्यारी, शारदा, रुक्मणी और नारायणी। यह सभी स्त्रियां पुरुष प्रधान नियमों के भेंट चढ़ा दी जाती हैं। यथा–

"अन्तरपुर गांव के इतिहास में दर्ज दास्तानें बोलती है– रस्सी के फंदे पर झूलती रुकमणी, कुएं में कूदने वाली रामदेई ,करबन नदी में समाधिस्थ नारायणी.... यह बेबस औरतें सीता मइया की तरह 'भूमि प्रवेश' कर अपने सती सतीत्व के कारण कुर्बान हो गई। ये ही नहीं और न जाने कितनी ... ।"[1]

विवेच्य उपन्यास में नारियों पर हो रहे अत्याचारों को प्रकट किया है। इन अत्याचारों से पीड़ित उपन्यास की नायिका सारंग गांव की सरपंच बन कर सत्ता परिवर्तन चाहती है इसीलिए वह प्रधान पद के लिए पर्चा भरती है।

'बेतवा बहती रही' उपन्यास की नायिका उर्वशी की त्रासदी संपूर्ण भारत में देखी जा सकती है। उर्वशी बड़ी ही सुंदर नारी होती है। उर्वशी दो पुरुषों के चक्कर में फंसकर तिलतिल कर मरती है। अजीत और बरजोर सिंह दोनों ही पशु प्रवृत्ति के व्यक्ति होते हैं। जिनमें इंसानियत ही नहीं है। अजीत उर्वशी का भाई है और बरजोर सिंह उर्वशी की सहेली मीरा का बाप होता है। बरजोर सिंह कामान्ध पुरुष है तथा अजीत धन पशु। स्त्री आदिकाल से ही भोग की वस्तु मानी जाती है। गरीब परिवार में आज भी बेटियां बेच दी जाती हैं। यथा–

"ओ बेतवा मइया अब किसी पर आस विश्वास नहीं, अपना मां–जाया भाई ही दुसमन बन बैठा तो अब कहां ठौर... जहां कहीं गई दो घड़ी चैन से ना कर सकी। प्राणों के लिए पल–पल भारी समेट मां मेरे पाप पुण्य... ।"[2]

विवेच्य उपन्यास में अजीत 10 बीघा जमीन बरजोर सिंह से लेकर सौदा करता है और अपनी बहन उर्वशी को उसे बेच देता है। जिसके कारण उर्वशी दुखी होकर नदी में कूदने पर विवश हो जाती है । उर्वशी को जब होश आता है तो वह बरजोर सिंह से शादी करने के लिए तैयार हो जाती है। वह सोचती है कि शरीर का बलिदान देना जरूरी नहीं बल्कि परिवार तथा भाई के हित के लिए पुनर्विवाह करवाना जरूरी है। उपन्यास में उर्वशी का भाई ही उसका दुश्मन बनता देखा जा सकता है और एक बहन अपने भाई से ही संघर्ष भरी जिंदगी जीने पर विवश हो जाती है।

'इदन्नमम' उपन्यास की कथा तीन पीढ़ियों में चलती है– बऊ, प्रेम व मंदा। बऊ एक आदर्श नारी है जो विधवा होने पर भी पूरी जिंदगी मर्यादा के साथ पितृसत्तात्मक नियमों को आदर्श मानते हुए जीती है जबकि प्रेम, मंदा की मां और बऊ की विधवा बहू है जो एक पर पुरुष से भाग कर शादी कर लेती है। मंदाकिनी की अपने प्रेमी मकरंद से शादी नहीं होती जिसके कारण वह अपना जीवन समाज सेवा के लिए अर्पण कर देती है। प्रस्तुत उपन्यास में मंदा और कुसमा के बीच संवाद से यह बात प्रस्तुत होती है–

"भाभी यह रीति रिवाज तो उन्होंने ही बनाए हैं, जिनने ये किताबें लिखी हैं, जिनके ऊपर यह किताबें लिखी गई है।"[3]

प्रस्तुत उपन्यास में अनेक ऐसे स्त्री पात्र है जो पुरुष प्रधान समाज के नियमों को पक्षपात समझती हैं और उनसे संघर्ष करती दिखाई देती हैं। मंदा, सुगना और कुसुमा आदि स्त्रियां पितृसत्ता को पक्षपात समझती हैं।

'अल्मा कबूतरी' उपन्यास जन्मजात अपराधी कहीं जाने वाली जरायमपेशा कबूतरा समाज की कहानी है। जिसमें कदमबाई, भूराबाई और अल्मा यह तीनों स्त्रियां बहादुर बनने के लिए अनेक संघर्षों से गुजरती है। भूरीबाई रामसिंह को पढ़ाने के लिए देह का धंधा करने को विवश दिखाई देती है। कदमबाई कज्जा अर्थात उच्च जाति के मंशाराम नाम के व्यक्ति से वंश साधना चाहती है। जिससे उसे राणा नाम बच्चे की प्राप्ति होती है लेकिन उच्च वर्गीय समाज राणा और रामसिहं जी को हीन दृष्टि से देखते हैं। तीन पीढ़ियों का प्रतिनिधित्व करती ये महिलाएं शिक्षा एवं सत्ता के महत्व को समझ गई हैं। यथा–

"अपनी गत अपने ही हाथों ...यहां कोई नहीं है, जो तुम्हें तंग करें। हमारे साब को खुस कर दो बस। आजकल वे बड़े उदास रहते हैं, हमसे देखा नहीं जाता। वह बीहड़ में जितने दबंग थे यहां इतने ही नरम ...।"[4]

उपन्यास के अंतिम फलक पर रामसिहं की बेटी अल्मा राजमंत्री श्री रामशास्त्री को भेंट कर दी जाती है। इसके पश्चात मंत्री मारा जाता है तथा अल्मा को उत्तराधिकारी के रूप में मंत्री पद की उम्मीदवार बनाया जाता है। इस तरह अल्मा भी अनेक संघर्षों को पार करती हुई एक बहादुर स्त्री के रूप में उपन्यास में देखी जा सकती है।

'झूला नट' उपन्यास की नायिका शीलो और बालकिशन की मां यह दोनों स्त्रियां संघर्षशील जीवन जीती दिखाई पड़ती हैं। मां बाप द्वारा बेटा सुमेर व शीलो की शादी बचपन में ही करा दी जाती है लेकिन जब सुमेर बड़े होते हैं तो थानेदार सुमेर को शीलो रास नहीं आती क्योंकि शीलो रंग से काली और कद से छोटी स्त्री होती है। सुमेर शीलो को त्याग कर शहर में चला जाता है। वहां जाकर वह दूसरी लड़की से विवाह कर लेता है। यथा–

"अपने चरणों से अलग ना करना, अम्मा। इस घर में पड़ी रहने दो, मैं खेत की घास ...बुरी घड़ी में जनमी, तुम्हारी चाकरनी बनकर रहूंगी। बालू की दुल्हन की टहल करूंगी। उनके बच्चे पालूंगी। रूखी सूखी खा कर घड़ी काट लूंगी।"[5]

इस तरह उपन्यास में शीलो द्वारा कहे गए शब्दों से व्यक्त होता है कि शीलो अपने पति द्वारा त्याग देने पर भी ससुराल को छोड़कर मायके नहीं जाना चाहती। वह सारा जीवन अपने सास की सेवा करने का फैसला करती है।

'कहीं ईसुरी फाग' उपन्यास काल्पनिक रजऊ और वास्तविक ईसुरी की प्रेम गाथा है। ईसुरी लम्पट कवि है, जिसे पाने के लिए रजऊ नायिका तरसती है। प्रस्तुत उपन्यास में अनेक स्त्रियां है ऋतु, सरस्वती देवी, मीरा बहू, ये सभी अनेक समस्याओं से जूझती हैं। रवीन्द्र त्रिपाठी के शब्दों में–

"ईसुरी यौवन का कवि है। ईसुरी और रजऊ युवा प्रेम के आद्द बिम्ब बन जाते हैं।"[6]

कम से कम बुंदेलखंड में लेखिका ने तुलसीराम और मादुरी, ऋतु माधव, गाइड शालिग्राम कटारे– सावित्री जैसे युगल चरित्रों के माध्यम से यह दिखाया है कि ईसुरी रजऊ की कहानी आज भी जीवित है। इस कहानी के रूप बदल गए हैं, चरित्र बदल गए हैं,

पर इसका मूल रूप अभी भी मौजूद है।

'विजन' उपन्यास प्राइवेट चिकित्सा व्यवस्था में होने वाली अराजकता एवं अमानवीयता का खुलकर प्रचार करता है। डॉक्टर आर.पी. शरण एवं उनके बेटा अजय के लिए चिकित्सा एक व्यवसाय मात्र है। वह अधिक से अधिक पैसा कमाना चाहते हैं। यथा–

"मरीज के साथ होते अन्याय से हर डॉक्टर को मतलब होना चाहिए। कमाल के व्यापारी हैं आप भी। कौडियों की चीज अशर्फियों के दाम।"[7]

प्रस्तुत उपन्यास में डॉ. आभा, सरोज नाम की मरीज पर हुए बलात्कार एवं डॉक्टर चोपड़ा द्वारा ऑपरेशन करते समय मरीज द्वारा लाए हुए लेंस को बदलने पर उसका विरोध करती है। डॉ. नेहा और डॉ. आभा यह सब बर्दाश्त नहीं कर पाती। मरीजों पर हो रहे अन्याय के खिलाफ आवाज उठाती हैं।

'अगनपाखी' उपन्यास की नायिका भुवन अपने बहनौता चंद्र से प्रेम करती है जो हिंदू समाज को बर्दाश्त नहीं है। भुवन षड्यंत्रकारी पुरुष चंद्र के पिता के कुचक्र में फंस कर अपनी जिंदगी को नर्क बना लेती है। इधर चंद्र को नौकरी मिलती है और दूसरी तरफ भुवन, पागल हुआ नामर्द युवक विजय सिंह को सौंप दी जाती है अर्थात उसका विजय सिंह से विवाह कर दिया जाता है। अंततः विजय मर जाता है। तब विजय के भाई अजय सिंह भुवन को सती प्रथा के भेंट चढ़ाने को तत्पर रहता है। लेकिन भुवन इस चक्कर से निकल जाती है और अपने पति स्वर्गीय विजय की संपत्ति को अपने नाम करवाने के लिए याचिका लगाती है–

"मैं भुवन मोहिनी पत्नी स्वर्गीय विजय सिंह वल्द स्वर्गीय दुरजयसिहं निवासी ग्राम विराटा जिला झांसी यह दावा करती हूं कि मैं अपने पति के हिस्से की चल अचल संपत्ति की हकदार हूं। मुझे इत्तला मिली है कि मेरे पति के साथ मुझे भी मृतक दिखाया गया है और मेरे जेठ कुंवर अजय सिंह ने अपने अकेले को हकदार रखा है। क्योंकि स्वर्गीय विजय सिंह की कोई संतान नहीं है। कचहरी से अर्ज है कि अपने पति की जायदाद का हक मुझे सौंपा जाए। मैं कुंवर अजय सिंह की हकदारी पर सख्त ऐतराज करती हूं।"[8]

विवेच्य उपन्यास में भुवन अपने घर के लोगों द्वारा किए गए अत्याचारों से संघर्ष करती हुई एक दिन अपने अधिकारों के लिए लड़ जाती है। उसको ज्ञात होता है कि उसके साथ जो हुआ वह गलत है। अतः वह सही मार्ग अपनाते हुए अपने हक के लिए याचिका दर्ज करवाती है। इसके साथ ही उपन्यास में प्राचीन काल से चली आ रही सती प्रथा पर भी भुवन ने गहरा प्रहार किया है।

'त्रियाहठ' उपन्यास मैत्रेयी पुष्पा के प्रथम उपन्यास 'बेतवा बहती रही' का अगला चरण है। जिसमें उर्वशी पति की संपत्ति पर गैरों के हक को, अपने एवं पुत्र देवेश के नाम करवाने को संघर्षरत दिखाई पड़ती हैं। यथा–

"मुझे कैसा लगता है, जब कोई मेरे हिस्से का खेत अपना कहकर जोतता है। मैं जिन मेड़ों से निकलती हूं, उनको अपना नहीं कहती, लेकिन मन पराई नहीं मानता।"[9]

प्रस्तुत उपन्यास में जहां उर्वशी संघर्ष करती दिखाई देती है, वहीं दूसरी ओर उर्वशी का बेटा देवेश भी अपनी मां के वास्तविक जीवन की तहकीकात करता है। यथा–

"तुम्हें पता है पिताजी, उर्वशी को उन दवाओं के जरिए मारा गया है, जो उसके इलाज के लिए दी जा रही थीं। हां, उनका केमिकल टेस्ट कराया जाए।"[10]

देवेश को उदय से पता चलता है कि जो उर्वशी को दवाएं दी जाती थी उन दवाओं के कारण वह दिन पर दिन खत्म होती गई। जिसके कारण उसकी रीड की हड्डी के टुकड़े हो गए और वह अपाहिज हो गई।

'गुनाह बेगुनाह' उपन्यास की स्त्रियां अनेक संघर्षों से जुड़ती है। रेशमी, सुरिन्द्र कौर और इला चौधरी आदि पुरुषों के अत्याचारों के खिलाफ संघर्ष करती देखी जा सकती हैं। इला चौधरी एक पुलिस कर्मचारी है। इला चौधरी का पुलिस में भर्ती होना एक सपना था लेकिन जब वह पुलिस थाने में आती है तो उसे वहां का सिस्टम देख कर बहुत ही ठेस पहुंचती है क्योंकि वह अपने घर वालों के खिलाफ होकर, अपनी शादी वाले दिन ही घर से भागकर पुलिस में भर्ती होती है लेकिन यहां पर आकर भी उसका मन बिल्कुल उदास है–

"दीदी आप ...इन लोगों ने तो आपके आने से पहले ही तलाशी ले ली। सारे कपड़े उतार लिए, अब फिर... ।"[11]

विवेच्य उपन्यास में पुरुष पुलिस कर्मचारियों द्वारा, अपनी सुरक्षा की मांग करने आई महिलाओं के साथ होत कुकर्मों को दिखाया गया है। पुलिस थाने में भी एक नारी पुरुषों के अत्याचारों से पीड़ित दिखाई देती

है। अंततः बेगुनाह से गुनहगार साबित कर दिया जाता है। इस दृश्य को देखकर इला स्वयं को टूटा हुआ महसूस करती है और वह इन अत्याचारों से स्त्रियों को मुक्त करवाने के लिए संघर्षशील दिखती है। इसी तरह उपन्यास की एक अन्य पात्र अर्चना भी अपने पति द्वारा सताई जाती है। वह हर महीने की तनख्वाह अपने पति के हाथ पर रख देती है लेकिन फिर भी वह उसे बहुत मारता तथा पीटता है और उसे टॉर्चर भी करता था–

"शराब पीना और फिर बीवी को पीटना जुल्म नहीं माना जाता, आदमी के लिए रिवाज है। रिवाज टूटता नहीं। मुझे बिना नागा पिटना है। यह मेरी सहनशीलता का बड़ा गुण है।"[12]

अर्चना इतना सब सहते हुए भी जीवन को जी रही थी लेकिन एक दिन उसे मौत की नींद सुला दिया जाता है। विवेच्य उपन्यास में एक आत्मनिर्भर नारी होने के बाद भी, एक स्त्री को संघर्ष करते दिखाया गया है।

"फरिश्ते निकले" मैत्रेयी पुष्पा का एक नया उपन्यास है जिसमें इन्होंने बेला बहू का वृतांत रचा है। प्रस्तुत उपन्यास में बेला और उसकी मां अनेक संघर्षों को पार करती हुई जीवन व्यतीत करती दिखाई पड़ती हैं। बेला जब बहुत छोटी आयु की थी तब उसके पिता की मृत्यु हो गई और बेला की मां ने अनेक समस्याओं से जूझते हुए अपना तथा बेला का पालन पोषण किया। बेला की मां बहुत ही आदर्शवादी नारी थी। पति की मृत्यु होने के बाद भी उसने जीवन में कभी भी हार नहीं मानी। यथा–

"मैं एक बैल उधार लेकर दो बैलों के साथ खुद ही हल चलाऊंगी। थोड़ा सा तो खेत है आदमी नहीं रहा तो जनी को ही आदमी बनना पड़ेगा।"[13]

विवेच्य उपन्यास में बेला की मां समय के साथ संघर्ष करती देखी जा सकती है। वह हार नहीं मानती बल्कि समय के साथ–साथ स्वयं को मजबूत बनाती है। इसी तरह एक और तथ्य आज भारतीय नारी को बहुत ही प्रताड़ित करता है वह है उसका बांझपन। उपन्यास में बेला के पास कोई संतान नहीं होती तो उसका पति उसे ताने मारता हुआ कहता है–

"हथिनी हो रही हैं खा खा के। औलाद के नाम पर मुसटिया तक पैदा नहीं कर पाई।"[14]

उपर्युक्त कथन के बाद यह तय होता है कि बेला ने भी अपने जीवन में अनेक कष्टों को सहा। बेला शुगर सिंह के कहने के बाद चुप नहीं बैठती बल्कि वह उसे उसके विपरीत जवाब देती है–

"तें हिंजड़ा खसिया ! दूसरी तीसरी चौथी ले आ। तेरी ही मूछें बारकर जाएंगी। वे गाय भैंस से घोड़ी नहीं, औरतें होंगी। मेरी तरह की औरत जैसी औरतें।"[15]

बेला शुगर सिंह को ज़ोर का धक्का देकर बाहर निकल जाती। प्रस्तुत उपन्यास में लेखिका ने प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से स्त्री जीवन की सच्चाईयों को मुखर किया है।

निष्कर्षतः यह कहना गलत नहीं होगा कि मैत्रेयी पुष्पा जी ने अपने कथा साहित्य में उपर्युक्त स्त्रियों को स्थान देकर पितृसत्ता से अवगत कराया है कि अब महिला समाज शिक्षित एवं पारखी हो गया है। उसे क्या सही है? क्या गलत है? इन बातों का अच्छा ज्ञान हो गया है, उनके लिए सभी क्षेत्रों का दरवाजा खुला है। वह बड़े–बड़े कार्यों को करने में सक्षम है। इसीलिए आत्मनिर्भर होकर एक पुरुष की भांति स्वतंत्रता पूर्वक जीवन जीना चाहती है। पुरुष समाज की अधीनता उसे स्वीकार नहीं। वर्तमान नारी इसका बहिष्कार करती है।

संदर्भ

1. मैत्रेयी पुष्पा, चाक, पृष्ठ संख्या–7
2. मैत्रेयी पुष्पा, बेतवा बहती रही, पृष्ठ संख्या–113
3. स. विजय सिंह बहादुर, मैत्रेयी पुष्पा : स्त्री होने की कथा, पृष्ठ संख्या–117
4. मैत्रेयी पुष्पा, अल्मा कबूतरी, पृष्ठ संख्या–359
5. मैत्रेयी पुष्पा, झूलानट ,पृष्ठ संख्या–57
6. स. विजय सिंह बहादुर, मैत्रेयी पुष्पा : स्त्री होने की कथा, पृष्ठ संख्या–215,216
7. मैत्रेयी पुष्पा, विजन, पृष्ठ संख्या–187
8. मैत्रेयी पुष्पा, अगुनपाखी, पृष्ठ संख्या–7
9. मैत्रेयी पुष्पा, त्रियाहठ, पृष्ठ संख्या–156
10. वह, पृष्ठ संख्या–165
11. मैत्रेयी पुष्पा, गुनाह बेगुनाह, पृष्ठ संख्या–19
12. वही, पृष्ठ संख्या–88
13. मैत्रेयी पुष्पा, फ़रिश्ते निकले, पृष्ठ संख्या–18
14. वही, पृष्ठ संख्या–33
15. वही, पृष्ठ संख्या–34

शोधार्थी, हिंदी–विभाग

महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय

बड़ौदा, गुजरात

जून : 2022

संग्रथन

ISSN 2278 - 6880
Approved by UGC

हिन्दी विद्यापीठ (केरल) तिरुवनन्तपुरम

ISSN 2278 - 6880
Approved by UGC

यू.जी.सी. से अनुमोदित हिन्दी मासिक पत्रिका

हिन्दी विद्यापीठ,
टी.सी.44/2670,जगती,
तिरुवनन्तपुरम- 695014
केरल।

संस्थापक संपादक :
स्व.पी.जी.वासुदेव

मुख्य संपादक :
डॉ.वी.वी.विश्वम
Mob: 9446662694
sangrathan2012@gmail.com

संपादक:
डॉ.एम.एस.विनयचन्द्रन
Mob: 9447657301
msvinayachandran61@gmail.com

Web Edition : www.sangrathan.com

वर्ष : ३४ अंक : 6 जून : 2022
मूल्य : २० रुपये मात्र वार्षिक चन्दा : दो सौ रुपये मात्र
आजीवन सदस्यता शुल्क : २,००० रुपये मात्र

संग्रथन का संरक्षक मण्डल

आचार्य राजेन्द्र नाथ मेहरोत्रा, 'हिन्दी-विश्व गौरव-ग्रन्थ' शृंखला के प्रणेता एवं प्रकाशक, ग्वालियर (म.प्र.), मो:९४२५११००७७
प्रो.(से.नि.).डॉ.टी.जी.प्रभाशंकर'प्रेमी',विश्वविख्यात हिन्दी साहित्यकार एवं शिक्षाविद्,बंगलूर,मो:९८८०७-८१२७८
श्री विमलकुमार बजाज,प्रखर समाजसेवी,व्यवसायी एवं अध्यक्ष, पूर्वोत्तर हिन्दी अकादमी,शिलाँग,मेघालय,मो:९४३६१-११८९१
श्री योगेन्द्र कुमार, नोइडा (उ.प्र) डॉ.उमाकुमारी.जे.

सम्पादक मण्डल

प्रोफ़.हिल्डा जोसफ़
डॉ.एम.एस.राधाकृष्ण पिल्लै
डॉ.सी.जे.प्रसन्नकुमारी
डॉ.श्रीलता.के
डॉ. सुमा.एस
प्रोफ़.ए.मीरा साहिब
श्री.के.जनार्दनन नायर
प्रोफ़.एन.सत्यवती
डॉ. सुनिलकुमार.एस
डॉ.सोफ़िया राजन

इस अंक में....

संपादकीय : केरल हिन्दी साहित्य मंडल का प्रमुख स्तंभ ढह गया।	डॉ.वी.वी.विश्वम्	5-6
मन की बात (मई २०२२)	श्री नरेन्द्र मोदी	7-13
रह जाएगी मैत्री, रह जाएगी करुणा......	डॉ.ए.अरविन्दाक्षन	14-15
भाषा के विविध रूपों की प्रयुक्ति (गतांक से आगे)	प्रो.(डॉ).आर.जयचन्द्रन	16-19
शैलेन्द्र सागर के कहानी संग्रह " 'ब्रंच' तथा अन्य कहानियाँ" में मूल्य बोध का सामाजिक पक्ष	हेमलता	20-25
'मैं हिजड़ा मैं लक्ष्मी' में चित्रित किन्नर जीवन	अनु.वी.एस.	26-28
पर्यावरण का असंतुलन : 'कुइयाँजान' उपन्यास के संदर्भ में	डॉ.जिन्सी मैथ्यू	29-34
पानजेंडर : दर्द उपेक्षा तथा घृणा से भरा जीवन-यथार्थ (चुनी गई कहानियों के संदर्भ में)	जितेन्द्र वघेला	34-38
यशपाल की कहानियों में मार्क्सवादी जीवन दृष्टि का प्रभाव	डॉ.वीणा.के.	38-42
राजभाषा कार्यान्वयन में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों का योगदान	डॉ.रम्या.जी.एस.नायर	42-45
विभाजन के अनदेखे पहलू : 'मुट्ठी भर कांकर' और 'घास गोदाम'	डॉ.अंजली.एस.	46-52
प्रसूति (कविता)	डॉ.नवीना नरितूकिल	53
प्रश्नोत्तरी	जुगनू	54

मुखचित्र - स्व.डॉ.टी.एन.विश्वंभरन

शैलेन्द्र सागर

शैलेन्द्र सागर के कहानी संग्रह '' 'ब्रंच' तथा अन्य कहानियाँ'' में मूल्य बोध का सामाजिक पक्ष

हेमलता

शैलेंद्र सागर हिन्दी साहित्य के प्रमुख साहित्यकार हैं। इनका जन्म उत्तर प्रदेश के रामपुर जनपद में ५ अप्रैल १९५१ को हुआ। शैलेंद्र सागर के परिवार में साहित्यिक वातावरण था। इनके कथा-साहित्य के अंतर्गत कई कहानी संग्रह और उपन्यास प्रकाशित हो चुके हैं। सागर की गणना उन साहित्यकारों में की जाती है, जिन्होंने आधुनिक जीवन की ऊब, अकेलेपन की स्थिति को अनुभूति के स्तर पर पहचाना और व्यक्त किया है। इसीलिए इनकी रचनाओं में परंपरा और आधुनिकता का कुशल चित्रण देखने को मिलता है।

मनुष्य का समाज से अटूट संबंध रहा है। इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं है कि मनुष्य के जीवन का विकास समाज में रहकर ही हो सकता है। समाज में रहकर मनुष्य जिन शाश्वत मूल्यों को ग्रहण करता है, उन्हें ही सामाजिक मूल्य कहा जाता है। सामाजिक मूल्य मनुष्य को मानवीय मूल्य की प्राप्ति में सहयोग देते हैं। बिना समाज के मूल्य की कल्पना करना असंभव है। सामाजिक मूल्य द्वारा ही मनुष्य अपना जीवन परिपूर्ण ढंग से जी पाता है। यदि मनुष्य को समाज से अलग कर दिया जाए तो उसमें मनुष्यत्व के गुण लुप्त हो जाएँगे और वह मात्र एक पशु के समान माना जाने लगेगा। ''सामाजिक मूल्य एक मानदंड होते हैं जो समाज के प्राणियों की इच्छाओं, संवेदनाओं, आवश्यकताओं व अभिरुचियों को प्रभावित करते हैं, इसीलिए अनिवार्य रूप से ग्रहणीय है।''[१] सामाजिक मूल्यों की यह स्थिति व्यक्ति को नियमबद्ध व क्रमबद्ध बनाती है। इन मूल्यों के निर्माण में व्यक्तियों का सामूहिक सहयोग अति आवश्यक है। जिस कारण मूल्य मानवीय सामाजिक संरचना के साथ गहनता से संबंधित है। इसी प्रकार सुपरिचित वरिष्ठ कथाकार शैलेन्द्र सागर ने भी आधुनिक समाज में व्याप्त विभिन्न समस्याओं को अपनी कहानियों के माध्यम से उजागर करने का प्रयास किया है। प्रस्तुत कहानी-संग्रह 'ब्रंच तथा अन्य कहानियाँ' में व्यक्ति तथा समाज से संबंधित मूल्य इस प्रकार हैं :-

वैयक्तिक मूल्य:--

वैयक्तिक मूल्य वह होता है जो किसी व्यक्ति विशेष की इच्छा, संवेदना या अभिवृत्तियों से संबंधित हो। व्यक्ति के व्यक्तित्व-निर्माण में वैयक्तिक मूल्य अति आवश्यक हैं। वैयक्तिक मूल्यों में व्यक्ति की निजी विचारधाराएँ और सामाजिक हित भी निहित रहता है। वह और किसी के भी प्रति उत्तरदायी नहीं रहता। वैयक्तिक मूल्य व्यक्ति को मानवता का बोध कराते हैं। समाज की प्रत्येक क्रिया का पहला केंद्र व्यक्ति होता है। वह अपने दृष्टिकोण के अनुसार वस्तुओं को देखता परखता है और

१. वासुदेव शर्मा : साठोत्तरी हिन्दी कहानी में मूल्यों की तलाश, पृ.सं.१७

अपने दृष्टिकोण के अनुसार ही मूल्यों के परिणाम को स्वीकारता है। इस प्रकार समाज में वैयक्तिक मूल्यों के माध्यम से सामाजिक मूल्यों की भी रक्षा की जाती है। प्रस्तुत कहानी संग्रह 'ब्रंच तथा अन्य कहानियाँ' में वैयक्तिकता का कहीं भी अभाव नहीं है। कहानियों के पात्र व्यक्ति स्तर को महत्व देते हैं। इसीलिए प्रत्येक पात्र के अपने कुछ वैयक्तिक मूल्य हैं।

'ब्रंच' शीर्षक कहानी में लेखक ने पात्रों के माध्यम से वैयक्तिक मूल्यों की चर्चा की है। कहानी का मुख्य पात्र अनुज पुरानी मान्यताओं को पूर्णतः नकारते हुए केवल भविष्य के बारे में सोचता है। इसी कारण वह अपने विगत दो पीढ़ियों के साथ ताल-मेल नहीं बिठा पाता। उसे अपने वैयक्तिक मूल्य ही सर्वोपरि है। जिस कारण वह अकेला रहना अधिक पसंद करता है। लेखक के अनुसार ''घंटों से अनुज इंटरनेट खोलकर उसमें डूबा हुआ है। दिव्या तीन चार बार उसके कमरे में आकर उसे देख कर वापस लौट गई है। वैसे यह उसके आराम करने का समय है पर आंखों में नींद कहाँ?....उसका मन तो बेटे के साथ ही उलझा हुआ है। अनुज से बातें करने को उसका मन बार-बार हुलसता है। पर उसे इसका लेशमात्र भी एहसास नहीं है।''[१] वह भारी दुनिया के आकर्षण के प्रभावाधीन अपने वैयक्तिक मूल्यों को अधिक महत्व देता है जिस कारण वह अपने आदर्शात्मक मूल्यों से दूर होता जाता है। विवेच्य कहानी में लेखक ने वैयक्तिक मूल्य को अहमियत देते पात्र का चित्र प्रस्तुत किया है।

'पुनरावृत्ति' शीर्षक कहानी में ईशा अपने पति के गैर जिम्मेवारी, लापरवाह और बेरुखीपन से तंग आकर अपने माता-पिता के घर चली आती है। उसकी माँ उसे अपनी स्थिति बताते हुए समझाती है कि परिवार बसाने के लिए बहुत कुछ सहना पड़ता है, पर ईशा कुछ भी सुनने को तैयार नहीं। वह कहती है, ''आपकी और मेरी जेनरेशन में यही फर्क है। आपने यह सब सहा और घुटकर अपनी जिंदगी गुज़ार दी। पर मैं ऐसा नहीं कर सकती। सर्विस करती हूँ, इंडिपेंडेंट हूँ और अपनी शर्तों पर जिंदगी जी सकती हूँ।''[२] अपनी माँ की बातों का ईशा खुलकर विरोध करती है और अपने वैयक्तिक सुख के लिए वह नवीन से दूर रहने का फैसला लेती है। कहानी में लेखक पात्रों के माध्यम से वैयक्तिक मूल्यों को चित्रित करता है।

मूल्य जब अपने आदर्शों और मान-मर्यादाओं को त्याग कर दुःखार्त स्थिति में पहुँच जाते हैं तो मूल्यों में विघटन पैदा हो जाता है। कई बार व्यक्ति के समक्ष ऐसी स्थिति आ जाती है कि वह अपने व्यक्तिगत अस्तित्व को लेकर दुविधा में पड़ जाता है। उस स्थिति में वह नकारात्मक पक्ष को महत्व देने लगता है। सामाजिक मूल्यों से अधिक वैयक्तिक मूल्यों को महत्व देना ही इसमें विघटन की स्थिति पैदा करता है। विवेच्य कहानी में लेखक वैयक्तिक मूल्यों के विघटन का चित्र प्रस्तुत करता है। 'सहभागिता' शीर्षक कहानी में अंकिता अपनी जिंदगी में माँ द्वारा हस्तक्षेप से परेशान है। उसकी माँ उसके हर काम और गतिविधियों पर नज़र रखती है। जिस कारण माँ-बेटी में वाक्‌युद्ध शुरू हो जाता है। इस पर ''ओके मॉम....।'' अंकिता समर्पण कर देती है। वह जानती थी कि यह एक संवेदनशील मुद्दा था, ''आयम सॉरी। आय हैव कमिटेड ए ब्लेंडर...।'' कहकर अंकिता उठकर अपने कमरे में चली जाती और दरवाजा बंद कर लेती है।''[३] वह अपने आप को एकांत और शून्य में पाती है। 'स्व' के अस्तित्व की रक्षा के लिए चुप

१. शैलेन्द्र सागर, ब्रंच तथा अन्य कहानियाँ, पृ.सं.१५ २. वही, पृ.सं.९४ ३. वही, पृ.सं.३६

रहना ही बेहतर समझती है, ताकि पारिवारिक मूल्यों में शांति बनी रहे। विवेच्य कहानी में लेखक ने वैयक्तिक मूल्यों की सर्वोच्चता को चित्रित किया है। इसी प्रकार 'वे औरतें' शीर्षक कहानी में तीनों औरतें अपने वैयक्तिक सुख के लिए पापड़ बनाने वाले सेंटर में काम करने लगती हैं। वहाँ उन्हें "किसी पुरुष का वर्चस्व नहीं था, उनके अस्तित्व का सम्मान था और उनके श्रम का मूल्य...। मूल्यहीनता के बोध से समूल्य होना उन्हें बड़ा सुखद एहसास कराता था।"[1] वह अपने दुखों को पीछे ही छोड़ आती हैं, उन्हें अपने होने का एहसास होने लगता है, जो उनके लिए किसी मूल्य से कम नहीं था। कहानी में कहानीकार ने अकेलेपन की पीड़ा से गुजर रहे पात्रों को दिखाया है। जिनका उनके पतियों की जिंदगी में कोई महत्व नहीं है। अपने वैयक्तिक मूल्यों की खातिर वे बाहरी जगत से जुड़ जाती हैं। जहाँ उन्हें सुकून की अनुभूति होती है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि कहानियों के सभी पात्र एक दूसरे से संबंधित हैं, किंतु कहीं न कहीं एक दूसरे से पृथक भी है। सभी अपने वैयक्तिक मूल्यों को ही महत्व देते हैं। वह अपने वैयक्तिक मूल्यों को सर्वश्रेष्ठ मानकर अन्य सभी मान-मर्यादाओं को नजरअंदाज़ कर देते हैं।

दांपत्यगत मूल्य :-

भारतीय समाज में विवाह को एक महत्वपूर्ण संस्कार माना गया है। स्त्री और पुरुष के मध्य परस्पर प्रेम ही दांपत्यगत सबंधों को परिभाषित करता है। स्त्री प्राचीन काल से ही इस संस्कार के प्रति निष्ठावान रही है। पति की आज्ञा का पालन करना वह अपना प्रथम धर्म समझती है। भारतीय मनीषियों द्वारा बताए गए चार आश्रमों में से एक गृहस्थ आश्रम है, जो अत्यधिक महत्वपूर्ण है। यह मानव जीवन का सार है। मनुष्य के अपने कुछ अधिकार, कर्तव्य और जिम्मेदारियाँ होती हैं जो गृहस्थ आश्रम के अनुसार दांपत्यगत मूल्य कही जाती हैं। पति-पत्नी एक दूसरे के सच्चे जीवनसाथी कहे जाते हैं जो सामूहिक प्रयत्नों से पारिवारिक सुख की चेष्टा करते हैं। सफल वैवाहिक जीवन के लिए एक दूसरे के प्रति समर्पणभाव अति आवश्यक है। आलोच्य कहानी संग्रह 'ब्रांच तथा अन्य कहानियाँ' में दाम्पत्यगत मूल्यों के विभिन्न पक्ष परिलक्षित होते हैं। कहानीकार ने कहीं तो गहन दांपत्यगत मूल्य को दर्शाया है, तो कहीं उन्हीं मूल्यों की अवहेलना भी दिखाई है। दांपत्यगत मूल्यों में प्रेम, समर्पण, सहनशीलता, विश्वास, त्याग की भावना शामिल रहती है। सफल वैवाहिक जीवन के लिए यह आवश्यक है कि पति-पत्नी एक दूसरे के लिए कुछ ऐसा करें जिससे उनके दांपत्यगत संबंध अत्यधिक दृढ़ हो जाएँ। कुछ ऐसी ही स्थिति कहानीकार ने 'वे औरतें' शीर्षक कहानी में दिखाई है। राधा अपने विवाह की २५ वीं वर्षगांठ मनाने जा रही है। इस अवसर पर वह अपनी दोनों बेटियों और दामादों को भी आमंत्रित करती है। जब तोहफे में राधा के दामाद, उसके पति के लिए टी शर्ट लाते हैं तो उनकी सोच पर व्यंग्य करते हुए कहता है "तुम लोग पगला गए हो क्या...। जब तक साँस है साथ तो रहेंगे ही। अब इस उम्र में ना तो तेरी मम्मी कहीं भागने वाली है और न ही मैं दूसरी औरत ला सकूं। इसमें कौन सी बड़ी बात है।"[2] राधा यह सब सुन कर मुस्कुरा देती है। उसे लगा जैसे सचमुच उसके पति ने बहुत बड़ी बात कही है। उसे २५ वर्षों का साथ मानों सुखद अहसास कराता है। लेखक ने इस कहानी में पति-पत्नी के मजबूत रिश्ते का प्रमाण प्रस्तुत किया है, जो आधुनिक समय में बहुत

१. शैलेन्द्र सागर, 'ब्रंच' तथा अन्य कहानियाँ, पृ.सं.२९ २. वही, पृ.सं.४९

कम देखने को मिलता है। दिन प्रतिदिन दांपत्यगत संबंधों में बदलाव नज़र आने लगा है। विवाह के परंपरागत बंधन कमज़ोर होते जा रहे हैं, जो तनिक सा भी तनाव आने पर टूट जाते हैं। प्रस्तुत कहानियों में लेखक ने विभिन्न पात्रों के माध्यम से दांपत्यगत मूल्य में विघटन की स्थिति को भी दिखाया है। 'रूपांतरण' शीर्षक कहानी में अक्षत और सलिला कुछ ही दिनों में शादी के बंधन में बंधने जा रहे हैं, परंतु शादी से पहले उनका आपसी तनाव, उनमें दूरियाँ पैदा कर रहा है। दोनों ही किसी गलतफहमी के शिकार हैं। अक्षत सलिला से चिढ़ते हुए बोलता है, "मुझे मालूम है कि तुम मुझसे बात क्यों नहीं करती क्योंकि तेरे अंदर पति के लिए सम्मान नहीं है। अभी जवान और खुबसूरत है तो पचास यार होंगे तेरे उन्हीं के दम पर कूदती है।"[1] अक्षत के इन वाक्यों से सलिला का अंतर्मन टूट जाता है। वह खुद को निस्सहाय महसूस करती है और सोचती है कि जो इंसान उसे इतना प्रेम करता था आज वही उसके लिए ऐसे शब्द बोल रहा है। विवेच्य कहानी में लेखक ने वर्तमान समाज में पति-पत्नी संबंधों में मूल्य विघटन की स्थिति को चित्रित किया है। 'घर बाहर' शीर्षक कहानी में उर्मिला विवाहिता होने के साथ-साथ थाने में सरकारी महिला आरक्षी भी हैं। घर और नौकरी दोनों संभालने के बाद भी उसका पति अवधेश उसे ताना देते हुए कहता है, "मुझे मत समझा ये सब...। मुझे मालूम है कि घर से बाहर आदमियों के बीच रहने का कितना शौक है तुझे। दरोगा बनने का ख्वाब देखती है। इसलिए सबको खुश रखना चाहती है। फिर चाहे बच्चा खाली पेट बिलखता रहे या आदमी भूखा प्यासा रहे।"[2] अवधेश के इन वाक्यों से उर्मिला अचंभित हो जाती है। उस दिन उसे एहसास हुआ औरत चाहे घर रहे या बाहर, दुत्कार ही सहना पड़ता है। रचनाकार का आशय आज के बदलते परिवेश में दांपत्यगत संबंधों का उद्घाटन करना है। इस प्रकार कहानीकार ने इन कहानियों के द्वारा आधुनिक समाज में जहाँ एक ओर पति-पत्नी के संबंधों में प्रेमभाव और आदर्श मूल्य को प्रस्तुत किया है, वहीं दूसरी ओर संबंधों में विघटन की स्थिति को भी दिखाया है। लेखक पात्रों के माध्यम से समाज में दांपत्यगत मूल्यों के बदलते रुख को पेश करता है।

पारिवारिक मूल्य :--

परिवार समाज की अटूट एवं आधारभूत इकाई है। भारतीय समाज में प्राचीन काल से ही परिवार का महत्व स्वीकारा गया है। अनादि काल में संयुक्त परिवार प्रथा का विशेष महत्व था। एक ही परिवार में तीन तीन पीढ़ियाँ निवास करती थीं, परंतु आधुनिक समय में संयुक्त परिवार का महत्व कम हो गया है। अर्थकेंद्रित दृष्टि और व्यस्त जीवन ने परिवार पर सबसे बड़ा प्रहार किया है। जिससे परिवार ने एक नया रूप धारण कर लिया है। अब परिवार में सिर्फ माता-पिता और उनके बच्चे ही होते हैं। परिवार में सदस्यों का आपसी संबंध एक विशेष मूल्य को दर्शाता है। परिवार में रहकर ही व्यक्ति जीवन के महत्व को समझ पाता है। पारिवारिक मूल्य व्यक्ति को परिवार के प्रति जिम्मेदारी का बोध कराता है। परिवार से ही व्यक्ति के व्यक्तित्व का निर्माण होता है। व्यक्ति परिवार द्वारा ही समाज में आता है इसलिए परिवार और समाज का घनिष्ठ संबंध है। पारिवारिक मूल्यों में आपसी प्रेम, स्नेह, दया, करुणा, त्याग, सम्मान आदि की भावना शामिल रहती है। मान मर्यादाएँ और आदर्श धारणाएँ ही सफल पारिवारिक जीवन मूल्यों

१. शैलेन्द्र सागर, ब्रंच तथा अन्य कहानियाँ, पृ.सं.१२६ २. वही, पृ.सं.१०

की श्रेणी में आती हैं जो सफल पारिवारिक जीवन जीने के लिए आवश्यक हैं। लेखक ने 'ब्रंच' शीर्षक कहानी में दिव्या और प्रकाश की, अपने बेटे के प्रति पारिवारिक चिंता को दिखाया है, जो एक पारिवारिक मूल्य है। अनुज अपने माता पिता की एकमात्र संतान है। वह अपने घर-परिवार से दूर रहकर नौकरी करता है। जब दिव्या और प्रकाश को पता चलता है कि अनुज घर आने वाला है तो उनकी ख़ुशी का कोई ठिकाना नहीं रहता। दिव्या ने सुबह उठते ही नहा धोकर घर के मंदिर में पूजा-अर्चना की। अनुज की सुरक्षित यात्रा के लिए...। प्रकाश ने जाहिरा तौर पर कुछ नहीं किया पर मन ही मन उस सर्वव्यापी परमशक्ति को स्मरण अवश्य किया"[१] ताकि अनुज सुरक्षित घर लौट आए। माता-पिता सदैव अपने बच्चों के लिए अच्छा ही सोचते हैं। उनके सुखद भविष्य की कामना करते हैं। अतःसफल पारिवारिक जीवन जीने के लिए पारिवारिक मूल्यों का होना अति आवश्यक है। विवेच्य कहानी में लेखक ने पारिवारिक मूल्यों की रक्षा की स्थिति का अंकन किया है। परंतु आधुनिक युग में परिवर्तन की स्थिति उत्पन्न हो रही है। परिवार में एक दूसरे के प्रति विरोध भावना मूल्य परिवर्तन की स्थिति पैदा करती है। आज परिस्थितियाँ बड़ी तेज़ी से बदल रही है। व्यक्ति के नैतिक भावों में परिवर्तन हो रहे हैं। जहाँ यह अनिवार्य और आवश्यक था, वहीं इसका दुखद पक्ष भी सामने आया है कि आज मूल्य में परिवर्तन उस दिशा में होने लगा है जो मनुष्य को पतन और विकृतियों की ओर ले जाता है। रिश्ते कच्चे धागे के समान हो गए हैं जो जरा सा भी तनाव आने पर टूट जाते हैं। 'सहभागिता' शीर्षक कहानी में अंकिता मुंबई जैसे बड़े शहर में नौकरी करती है। उसके माता-पिता पहले लखनऊ रहते थे लेकिन कुछ दिनों से वह भी अंकिता मुंबई जैसे बड़े शहर में नौकरी करती है। उसके माता-पिता पहले लखनऊ में रहते थे लेकिन कुछ दिनों से वह भी अंकिता के पास आए हुए हैं। उसकी माँ को इतने बड़े शहर में नौकरी करने से अंकिता की चिंता होती है। जिस पर अंकिता झल्ला कर बोलती है, "बस क्या, सुबह शाम वही बातें करती रहती हो। इतने साल अकेली रही तो क्या हो गया। कितने आराम से रहती थी। अब तुम्हें बुला लिया है तो सारी आफत आ गई है।"[२] अंकिता के इन वाक्यों से उसकी माँ को बहुत दुख होता है। कहानीकार इस कहानी में पारिवारिक मूल्यों के उल्लंघन को दिखाता है। जिस कारण माँ-बेटी के रिश्ते में विघटन की स्थिति पैदा हो जाती है। अर्थ की महत्ता के कारण आधुनिक समाज में संतानों को माता-पिता की उपस्थिति और अनुपस्थिति से कोई विशेष अंतर नहीं पड़ता। इस प्रकार लेखक ने इन कहानियों के माध्यम से पारिवारिक मूल्यों का वर्णन तो किया है साथ ही उनमें विघटन और परिवर्तन की स्थिति को भी उजागर किया है। पारिवारिक मूल्यों का तब तक ही महत्व होता है, जब तक परिवार के सदस्य प्रेमभाव से रहते हैं। प्रेमभाव का समापन मूल्य विघटन की स्थिति उत्पन्न करता है। पारिवारिक संबंधों में आया ऐसा बदलाव परिवार के अर्थ को ही बदल देता है।

परंपरागत मूल्य :--

मूल्य, जीवन की आधारशिला है। मूल्य मनुष्य के अस्तित्व से जुड़े होते हैं। मूल्य मनुष्य को संस्कारवान बनाते हैं। प्राचीन समय से जो रीति-संस्कार चले आ रहे हैं, भारतीय समाज में उन्हें परंपरागत मूल्य के रूप में लिया गया है। परंपरागत

१. शैलेन्द्र सागर, ब्रंच तथा अन्य कहानियाँ, पृ.सं.६५ २. वही, पृ.सं.६८

मूल्य मनुष्य को समाज और संस्कृति से जोड़कर रखते हैं। मूल्य संस्कृति का ही अंग है। यदि संस्कृति में परिवर्तन हुआ तो मूल्य भी परिवर्तित हो जाते हैं और मूल्य परिवर्तन से समाज भी परिवर्तित हो जाता है। परंपरागत मूल्यों में परिवर्तन मानवीय संबंधों में जिस प्रकार बड़ी तीव्रता से होने लगा है, उसमें परिवार एक ऐसी इकाई है जहाँ नैतिकता के कई मूल्य खोखले साबित हुए हैं। आधुनिक युग में शिक्षा और विकास के प्रसार के कारण युवा पीढ़ी परंपरागत मान्यताओं और मूल्यों के प्रति भी विद्रोही बन रही है। वह परंपरागत मान्यताओं का बंधन स्वीकार नहीं करना चाहती। यही कारण है कि इन मूल्यों में व्यापक टकराहट की स्थिति उत्पन्न हो रही है। विवेच्य कहानी-संग्रह का लेखक भी परंपरागत मूल्यों का यही रूप प्रस्तुत करता है। जहाँ विवाह को एक महत्वपूर्ण संस्कार माना गया है, जो स्त्री-पुरुष के संबंधों को एक सूत्र में पिरोता है, परंतु आज स्थिति ऐसी हो रही है कि स्त्री-पुरुष की परपरागत छवियाँ टूट रही हैं। विवाह मात्र समझौता बनकर रह गया है। नई पीढ़ी की संतानों के लिए विवाह का कोई मूल्य नहीं रहा है। परंपरागत मूल्यों का एक उदाहरण 'सहभागिता' शीर्षक कहानी में मिलता है। जहाँ विवाह संस्कार को महत्वपूर्ण माना गया है। कहानी में अंकिता की माँ को उसके विवाह की अत्यधिक चिंता है। वह अंकिता के पिता से कहती है "बच्चों की शादी-ब्याह....। अंकू तीस की होने जा रही है।"[1] यह कहते ही अंकिता की माँ का स्वर कमज़ोर पड़ जाता है। क्योंकि अंकिता को इन सब में कोई रुचि नहीं है। वह पहले अपना कैरियर बनाना चाहती है, उसके बाद ही शादी करना चाहती है। रचनाकार की इस कहानी से स्पष्ट होता है कि मानव-जीवन में विवाह अत्यधिक महत्वपूर्ण है। विवाह के बिना व्यक्ति अधूरा माना जाता है। यह तो एक परंपरागत मूल्य है। जिससे कोई भी व्यक्ति अछूता नहीं रह सकता। 'ब्रंच' शीर्षक कहानी में दिव्या अदिति से अनुज की बहू होने के स्वप्न देखती हुई कहती है, "क्या कहूँ....? अनु की बहू खूब सुंदर गुड़िया जैसी होनी चाहिए जिसकी आँखों में शर्म और सम्मान हो, हम लोगों और अनुज की इज्जत करे, उसे खुश रखे, उसके घर को सुख समृद्धि से भर दे.....।"

पर अनुज इन सब बातों से अंजान है। वह परिवार के परंपरागत मूल्यों को समझता है, इसीलिए परिवार की अनुमति और सहमति से ही विवाह का फैसला लेता है। प्रस्तुत कहानी में कहानीकार आधुनिक समाज में परंपरागत मूल्यों का एक नया आदर्श प्रस्तुत करता है। यहाँ प्राचीन परंपरागत मूल्यों को सुरक्षित रखने का सफल प्रयास किया गया है। अतः विवेच्य कहानी संग्रह 'ब्रंच तथा अन्य कहानियाँ' में कहानीकार ने परंपरागत मूल्यों के दोनों रूपों को प्रस्तुत किया है। जहाँ प्राचीन परंपरागत मूल्यों की रक्षा की गई है। वहीं, कहीं पर इसमें पात्रों द्वारा विघटन की स्थिति को भी दिखाया है। परंपरागत मूल्यों को आधुनिक समाज से कड़ी चुनौती मिली है, जिस कारण इनमें विघटन की स्थिति पैदा हो गई है। यह विघटन समाज के समस्त मूल्यों की जड़ों को हिला रहा है।

शोध छात्रा,
महाराज सयाजीराव
विश्वविद्यालय,
बड़ौदा, गुजरात।

१. शैलेन्द्र सागर, ब्रंच तथा अन्य कहानियाँ, पृ.सं.१९

Dr. Dipendrasinh Pushpendrasinh Jadeja

Faculty: Faculty of Arts | **Department:** Department of Hindi

Phone No.: 9427342074.00 | **Designation** Professor(Direct Recruitment)

Email: d.p.jadeja hindi@msubaroda.ac.in

सत्यं शिवं सुन्दरम्

Published Articles/Papers in Journals/Edited Volumes

	Sr No.	Author(s)	No. of Authors	Author Type	Title	Type	ISSN (Without -)	ISBN (Without -)	Journal/Book Name	Volume No.	Page No. (Range)	Date	Level	Peer Reviewed?	H Index	Impac Facto
Edit Delete	1	Hem lata	1	First Author/Main Author/Principal Author	shailendra sagar ke kahani sangrah brunch tatha anya kahaniyon me mulya bodh ka samajik paksh	Journals	2278 6880		sangrathan	6	20 25	06-2022	International	☐		
Edit Delete	2	Hem lata	1	First Author/Main Author/Principal Author	Maitreyi pushpa ke upnyas sahitya mein nari sangharsa	Journals	2319 6513		sahitya vithika	18	121 124	06-2021	International	☑		
Edit Delete	3	VIJAY PRAKASH YADAV	1	First Author/Main Author/Principal Author	MAANVIY SAMVEDNAON EVAM SANGHARSHON KE UDGHOSHAK : PANDIT GANGAPRASAD MISHRA	Journals	23196513		SAHITYA VITHIKA	17	64-67	12-2020	International	☑		
Edit Delete	4	Prof.Dipendrasinh Jadeja	1	Contributor	krantikari rachana ke sandarbh mei shambuk	Journals	2249-930x CARE LIST		hindi anushilan	1	219-226	03-2020	International	☑		
Edit Delete	5	VIJAY PRAKASH YADAV	1	First Author/Main Author/Principal Author	'BUND AUR SAMUDRA' UPANYAS ME PRATIBIMBIT LUCKNOW KA JANJIVAN	Journals	23196513		SAHITYA VITHIKA	16	79-82	12-2019	International	☑		
Edit Delete	6	Prof.Dipendrasinh Jadeja	1	Contributor	Gandhiji ka bhasha chintan	Journals	2582-0907 CARE LIST		Samanvay paschim	4	73-78	12-2019	International	☑		

आजादी का अमृत महोत्सव के तहत

हिन्दी विभाग, गुजरात यूनिवर्सिटी, अहमदाबाद

एवं

केंद्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा- अहमदाबाद केन्द्र

द्वारा आयोजित

राष्ट्रीय संगोष्ठी

फणीश्वरनाथ रेणु और उनका रचना संसार

दिनांक : 25 मार्च, 2022

प्रमाणपत्र

प्रमाणित किया जाता है कि श्री./ प्रो./ डॉ. हेमलता .... संस्था / स्थान महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय, बड़ौदा ... ने हिन्दी विभाग, गुजरात यूनिवर्सिटी, अहमदाबाद एवं केंद्रीय हिन्दी संस्थान, अहमदाबाद केन्द्र द्वारा "फणीश्वरनाथ रेणु और उनका रचना संसार" विषय पर दिनांक : 25 मार्च, 2022 को आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में रेणु और मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में आँचलिकता .... विषय पर सहभागी हुए / प्रपत्र पठन किया / अध्यक्ष / विषय विशेषज्ञ के रूप में वक्तव्य देकर अपना सक्रिय योगदान दिया ।

रापरमार		
डॉ.राजेन्द्र परमार	डॉ.सुनीलकुमार	डॉ.निशा रम्पाल
संगोष्ठी संयोजक	संगोष्ठी समन्वयक	हिन्दी विभागाध्यक्ष

हिन्दी साहित्य अकादमी, गांधीनगर

द्वारा आयोजित

त्री-दिवसीय छात्र-उन्मुख प्रशिक्षण शिविर 6, 7, 8 फ़रवरी - 2020

प्रमाण-पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि

श्री/ श्रीमती/ कु/ डा हैम लता ने

हिन्दी साहित्य अकादमी, गांधीनगर द्वारा आयोजित

'त्री-दिवसीय छात्र-उन्मुख प्रशिक्षण शिविर',

केलनपुरी तीर्थक्षेत्र, दादा भगवान मंदिर, केलनपुर, जि वडोदरा में

प्रतिभागी / वक्ता के रूप में उपस्थित रहकर सक्रिय सहभागिता का निर्वहन करते हुए

शिविर को गौरवान्वित किया है।

संयोजक
प्रो. दीपेन्द्रसिह जाडेजा

महामात्र
डा. अजयसिंह चौहाण